WELCOME

रूपरेखा

- ✓ प्रास्तावना –
- ✓ समाजिकरण का अर्थ –
- ✓ समाजिकरण कि परिभाषा –
- ✓ समाजिकरण कि विशेषतायें –
- ✓ समाजिकरण के प्रकार –
- ✓ समाजिकरण कि अवस्थायें –
- ✓ समाजिकरण के सिद्धांत –
- ✓ समाजिकरण के कारक –
- ✓ निष्कर्ष –
- ✓ सन्द्रर्भ ग्रन्थ सूची –

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। बिना समाज के किसी भी व्यक्ति के सर्वागण विकास कि कल्पना नही कि जा सकती हैं। इसके माध्यम से व्यक्ति, जीवन से संबंधित विभिन्न प्रकार के व्यवहार को सीखता हैं। जैसे– परोपकार करता, आत्मनिर्भर होना, सभ्य एवं सुशील बनना। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने संस्कार, धर्म, संस्कृति, मानवीय मूल्य नैतिकता, आदि को सीखता हैं।

सामाजिकरण के महत्वपूर्ण घटकों में परिवार समाज एवं समुदाय कि महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

अर्थ

- समाजीकरण एक प्रकिया हैं, जिसके द्वारा एक जैविक प्राणी सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होता हैं।

उदाहरण :– एक शिशु का समाजिक व्यक्तित्व को प्राप्त करना ।

परिभाषा

- **ग्रीन के अनुसार :—**

"सामाजिकरण वह प्रकिया हैं, जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं को आत्मपन एंव व्यक्तित्व को प्राप्त करता हैं।"

- **किंबल के अनुसार :—**

"सामाजिकरण वह प्रकिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक एंव सास्कृतिक क्षेत्र में प्रवेश करता हैं। तथा समाज के विभिन्न सदस्यों का समुहों या समूहों का सदस्य बनता है। इसके द्वारा ही उसे समाज के मूल्यों और मानकों को स्वीकार करने कि प्ररेणा मिलती हैं।"

समाजिकरण कि विशेषतायें

- समाजीकरण एक सीखने कि प्रकिया हैं।
- एक जीवन पयनत चलने वाली प्रकिया हैं।
- समाजीकरण समय के सापेक्ष हैं। अर्थात समय के साथ इलाके स्वरूप में अंतर आ सकता हैं।
- समाजीकरण स्थान सापेक्ष हैं।
- सांस्कृतिक को आत्मसामत करने कि प्रकिया ही सामाजीकरण हैं। उससे आत्म का विकास होता हैं।
- सांस्कृतिक दस्तांरण का साधन हैं।

समाजीकरण के प्रकार

यह दो प्रकार के होतें हैं।

(1) प्राथमिक समाजिकरण :–

(2) द्वितीय समाजिकरण :–

समाजीकरण कि अवस्थायें

इसके चार अवस्थायं होती हैं।

- शैशवकाल :–
- प्रांरभिक बाल्यवस्था :–
- उत्तर बाल्यवस्था :–
- किशोरावस्था में समाजीकरण :–

समाजिकरण को प्रभावित करने वाले कारक

- धर्म :–
- राष्ट्रीयता :–
- संस्कृति :–
- भाषा :–
- वातारण :–

समाजिकरण मुख्य सिद्धांत

- समाजिकरण के कुछ मुख्य सिद्धांत निम्न हैं।

- ❑ कुले का स्वदर्पण का सिद्धांत :–
- ❑ मीड का सिद्धांत :–
- ❑ दुर्खीम का सामूहिक प्रतिनिधत्व का सिद्धांत :–
- ❑ एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत :–

निष्कर्ष

जैसा कि वह सामाजिक वातावरण में बढ़ता है और सामाजिक संदर्भ में, वह विभिन्न प्रकार के व्यवहार विकसित करता है। जिसे समाजिक कहा जाता हैं, और धीरे – धीरे एक समाजिक जानवर बन जाता है। मानव जीव समाज और समाजिक बल का उत्पोपाद है। जिसे तरीके से मानव बच्चा समाज का स्वीकृत सदस्य बनना सीखते है।

संद्रर्भ ग्रन्थ सूची

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम
• जी. एच. मीड	• 1934 माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटी, शिकागों यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो
• एच. एम. जानसन	• 1963 सोसियोलॉजी।
• के. डेविस	• हामून सोसाइटी, मैकमिलन, न्यूयॉर्क ।

THANK YOU